दिसम्बर माह की साधनायें

गीता जयन्ती पर गीता मंत्र अनुष्ठान

गीता वास्तव में एक महान् तांत्रोक्त ग्रंथ है। जीवन में व्यापत भूत-प्रेत बाधा, रोग, दरिद्रता आदि नारकीय कुस्थितियों का निवारण होता है और साथ ही सर्व कार्य सिद्धि, सम्मोहन, आकर्षण, लक्ष्मी वृद्धि की सुस्थितियों की प्राप्ति होती है।

उक्त साधना गीता जयन्ती पर जो कि दिनांक 01 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 28 से 29 पर अंकित है।

गुरू पादुका दिवस पर पादुका पूजन प्रयोग

गुरू पादुका स्वयं गुरू का साक्षात स्वरूप है, इसके पूजन से साधक की सोलह कलायें- मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, बिन्दु, कला पद, निर्वाधिका, अर्धचन्द्र, नाद, नादान्त, शक्ति, कृयापिका, समन्ना, उन्मना से सभी स्वतः ही विकसित हो जाती है।

उक्त प्रयोग गुरू पादुका दिवस पर जो कि दिनांक 02 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 17 से 22 पर अंकित है।

अन्नपूर्णा जयन्ती पर अन्नपूर्णा सिद्धि साधना

इस साधना से जीवन में अक्षय अन्न का भण्डार, शाश्वत सुख, वरदान प्रदायिनी, अभय प्रदायिनी, सुख-समृद्धि, अरोग्यता, सुसंस्कारमय संतान, सौन्दर्य, पाप मुक्ति, पवित्रता की प्राप्ति होती है।

उक्त साधना अन्नपूर्णा जयन्ती पर जो कि दिनांक 04 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 3 पर अंकित है।

मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर पंचांगुली कल्प

पंचांगुली देवी काल ज्ञान की देवी है, जिनकी साधना से सामने वाले को देखकर उसका भविष्य पूर्णरूप से ज्ञात होता है तथा भविष्य की घटनाओं व दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है। साधक हस्त विज्ञान में पारंगत, भविष्यवक्ता बन जाता है।

उक्त साधना मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर जो कि दिनांक 04 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 23 से 24 पर अंकित है।

त्रिपुर भैरवी जयन्ती पर चैतन्य भैरवी साधना

शिव और शक्ति का पूर्ण सायुज्य भैरवी साधना से प्राप्त होता है। जीवन में सौन्दर्य, लावण्य, ओज, तेज, आनन्द, कामना पूर्ति, सरसता, भोग, गृहस्थ सुख, उचित वर-वधू प्राप्ति हेतु यह साधना सहायक है।

उक्त साधना त्रिपुर भैरवी जयन्ती पर जो कि दिनांक 04 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 26 से 27 पर अंकित है।

सफला एकादशी पर सर्व कार्य सिद्धि साफल्य साधना

इस साधना से जीवन में आने वाली बाधाओं से लड़ने के लिये दैवीय चेतना, ज्ञान व आत्मबल प्राप्त होता है, जिससे किसी भी कार्य को न्यूनतम प्रयास व सरलता से सम्पन्न किया जा सकता है और सर्व कार्य सफलता में पूर्णता प्राप्ति होती है।

उक्त साधना सफला एकादशी पर जो कि दिनांक 15 दिसम्बर 2025 को सम्पन्न करे, जो कि नवम्बर की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 3 पर अंकित है।

मोक्षदा शक्तिपात दीक्षा

भगवान दत्तात्रेय के अवतार के विषय में शिव पुराण, स्कन्द पुराण, भविष्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, वायु पुराण, विष्णु धर्मोत्तर पुराण इत्यादि में वर्णन है।

जगत के प्राणियों के दुःख एवं ताप के निवारण हेतु भगवान दत्तात्रेय ने इस जगत में आविर्भूत होकर लीला की और जब तक इस जगत में दुःख एवं ताप विद्यमान रहेंगे, तब तक भगवान दत्तात्रेय ने अपना देह विसर्जन ना करने का संकल्प लिया है। वे उसी देह और उसी भाव में अवस्थित रहेंगे। महाप्रलय पर्यन्त उनका दीर्घ अस्तित्व माना गया है। तन्त्र शास्त्र में दत्तात्रेय जी को चिरंजीव कहा गया है। वे सदेह विद्यमान हैं, उनके विषय में तन्त्र शास्त्र में वर्णन है कि स्मरणमात्रत आममात्मनः अर्थात् अपने भक्तों के स्मरण करने मात्र से ही भगवान दत्तात्रेय दर्शन दे देते हैं और उनके सभी दुःख शोक का निवारण करते हैं।

आज के समय में अनेक विषम परिस्थितियां व्यक्ति के जीवन में विद्यमान रहती हैं। जिनके निवारण के लिये वह तरह-तरह के उपाय करता है। परन्तु उसे इच्छित परिणाम नहीं मिलता, उसके अनेक उपाय निष्फल से प्रतीत होने लगते हैं, ऐसे समय में उसका ईश्वरीय सत्ता से विश्वास डगमगाने लगता है, कभी-कभी वह निराशाजनक विचारों में घिर जाता है और दैवीय शक्ति पर ही क्रोधित हो जाता है, तो कभी वह उनसे अपने जीवन की रक्षा हेतु याचना करता है।

ऐसी स्थिति लगभग प्रत्येक व्यक्ति के साथ होती है, जब वह जीवन की समस्याओं से लम्बे समय से घिरा हो और उसे कोई स्थायी समाधान ना मिले। जीवन सुख-दुःख के रंगों से बनी एक अनसुलझी पहेली है, जिसे सुलझाना तो आवश्यक है, लेकिन यह इतना भी सरल नहीं कि हर कोई सुलझा सके। लेकिन निरन्तर प्रयास द्वारा कुछ परतें उधेड़ी जा सकती हैं, और यदि एक भी परत आपने उधेड़ ली तो आगे की परते उखड़नी निश्चित है, अर्थात् व्यक्ति धैर्य के साथ सही दिशा में यदि प्रयास करे, तो वह अपनी समस्याओं से निजात पा सकता है।

विचारणीय तथ्य भी यही है कि हमारी **समस्यायें** जीवन भर ना रहें, वे समाप्त हों, सही समय पर उनका शमन हो जाये और व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो, क्योंकि यह भी सत्य है कि हमारी **बाधायें,** हमारे विकास को अनेक वर्ष पीछे की ओर धकेल देती हैं। जिनके कारण हमारा बहूमूल्य समय नष्ट हो जाता है और जिस स्थिति को हमें दो साल पहले प्राप्त करनी थी, उसे बाधाओं के कारण हम आगे के चार वर्षो में अथक प्रयासों द्वारा प्राप्त कर पायेंगे।

इस प्रकार जीवन अनेक **विषम स्थितियों** में घुटता रहता है। व्यक्ति को इसके स्थायी समाधान की ओर बढ़ना चाहिये और यह संभव है दत्तात्रेय प्रणीत मोक्षदा दीक्षा से.... !! मोक्षदा का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति अपने जीवन की बाधा, पीड़ा, दुःख, संताप, रोग, कठिनाईयों से मोक्ष प्राप्त करें, मुक्त हो सके, जीवन की इसी स्थिति को मोक्ष कहा गया है। इस दीक्षा द्वारा साधक की न्यूनता रूपी स्थितियों का शमन होगा, उसे अपनी समस्याओं से निकलने का मार्ग प्राप्त हो सकेगा। साथ ही वह ऐसी ही क्रियात्मक चेतना द्वारा जीवन को सुस्थितियों से परिपूर्ण कर सकेगा।

मोक्षदा शक्तिपात दीक्षा न्यौछावर ₹ 1800/-